ISSN: 2393-8900 IMPACT FACTOR : 1.9152(UIF) VOLUME - 4 | ISSUE - 10 | JUNE - 2018

HISTORICITY RESEARCH JOURNAL

महिला उपन्यास लेखन के विविध आयाम

डॉ. सौदागर सालुंखे

प्रस्तावना -

हिंदी साहित्य जगत में उपन्यास विधा का अनन्य साधारण महत्व रहा है। अन्य विधा की अपेक्षाउपन्यास का कैनव्हास बृहद होता है । विस्तार और बारीकि से रचनाकार की अपनी भुमिका बखुभी निभानेके अंत तक के प्रयास का दूसरा नाम उपन्यास ही होता है। इस कारण मानवीय संवेदना के धरातल परउपन्यास खरा उतरता है। सामाजिक पृष्ठभूमि में मानवीय संवेदना की यथार्थता को वर्तमान परिप्रेक्ष्य में बदलते परिवेशनुकूल संबंधसंदर्भ की प्रासंगिकता का लेखन पुरुष लेखकों के समान ही नही बल्कि उसके आगे जाकर बिंदु स्पर्श करनेका संवेदनशील राज्य महिला उपन्यास कारों ने किया है। यह बात साहित्य के लिए ही नही सदी के लिए भीसराहनीय है। इसलिए ये बधाई के पात्र है जिन्होंने लेखन माध्यम से न केवल अपने स्तरीय सोच विचार काबल्कि संपूर्ण भारतवर्ष के अन्य भाषाओं के साहित्य जगत को गौरवशाली राष्ट्रभाषा के स्तरिय लेखन का भीपरिचय कराया है| इसलिए हिंदी के उपन्यास क्षेत्र में दलित विमर्श औरस्त्री विमर्श की चर्चा होती रही। मैत्रेयी पुष्पा- इदन्नम, चाफ, मृदला गर्ग- कठगुलाब, गितांजली श्री- श्री- माई,आदि उपन्यासभी काफी चर्चित रहे । समाज से जुड़े अन्यान्य समस्याओं पर भी उपन्यासलिखे गए किन्तु वे केंद्र में नहीं लाए गए।

वैश्वीकरण, बाजारवाद पारिवारिक तथा सामाजिक विघटन आदि समस्याओं के कारण आधुनिक आधुनिक उपन्यास लेखन जिस ओर जा रहा है उससे भारतीय समाज एवं संस्कृति के प्रति उठे गहन किंतुगंभीर प्रश्न मनुष्य को आत्मचिंतन के लिए प्रेरित करते है| ममता कालिया-दौड उपन्यास ने मार्केटींग केजमाने में रिश्तो की कम होती जा रही अहमीयत पर प्रश्न चिन्ह लगाये है | यह उपन्यास न केवलसदी के बदलाव को बल्कि हमारे बदलते सोच विचार एव मान्यता को भी रेखांकित

करता है | चंद्रकांता का 'कथासतिसर' उपन्यास में कश्मीर की कथा है । जो पौराणिक होते हुए भी आधुनिक लगती है मृणाल पांडेरास्तों पर भटकते हुए ने पत्रकारिता एवं राजनीतिक क्षेत्र में फैले भ्रष्टाचार का वर्णन करते हुए थकता नहीं हैतो कमल कुमार- का यह खबर नही उपन्यास एक मदारी के माध्यम से हमारी व्यवस्था के अधनंगेपन परव्यंग कसता है| मधु कांकरिया खुले गगन के लाल सितारे नक्सवाद की भीषणता का रोद्र रुप है। कृष्णासोबती- द्वारा लिखे 'समय सरगम' के ईशान और और अरण्या वेबुढे है जो बुढापा भी जींदा दिली से जीनाचाहते है । जीवीतता तो उनका हक है वो हम छिनते है |गुनाहगार तो हम है और उपर सेदोष परिस्थिती कोदेते है । मनुष्य का बुढापा उसके जीवन और निष्ठुर नियति का अविभाज्य अंग है । जो हमे मानवियता काअहसास कराते है | मैत्रेयी पुष्पा- का अल्मा कबूतरी में पुष्पा जी ने हाशिए पर रहे कबुतरा जाति को चित्रितकिया है । वर्तमान जीवन में राजनीति के दाँव पेंच, षड्यंत्र. गुनाहगारी आदि पर प्रकाश डालना उपन्यासकार का उद्देश रहा है | पुष्पा जी का अगनपाखी उपन्यास स्त्री विमर्श के रुप में चर्चित रहा | इसका कथ्यबुंदेलखंड परिवेश के ग्रामिण जीवन के अंतर्विरोधों को उद्घाटित करता है । यह मात्र भुवनमोहीनी की कथानही है बल्कि उस स्त्री की कथा है जो अपने हक के लिए अपनों के खिलाफ अदालत में खड़े होने कोमजबूर करनेवाले सामंती परिवार परिवेश की है। इसलिए उसकी अदम्य जिजीविषा सराहनीय है।गीतांजलि श्री- का तिरोहित उपन्यास समलैंगिकता जैसे अलग किंतू अछूते विषय आशय के रुपमें मकानमालकिन बच्चों उसकी आश्रिता ललना मन और शरीर की हवस मिटाने के लिए एक दुसरे को पूरक मानतीहै। समलैंगिकता पर भाष्य करने वाला यह हिंदी का पहला उपन्यास कबीले तारिफ है। उनका सरावगी काशेष कादंबरी उपन्यास पुरुष प्रधान समाज व्यवस्था से प्रताड़ित स्त्रियों की अनेकानेक समस्याओं का लेखा-जोरवा है । जिसमें सरिता, फरहा, आशा जैन की बेटी मायाबोस, सायरा, ऐसी कई महिलाओं की समस्याएँरुबरु हुई है। चित्रा मुदगल- के गिलिगडु उपन्यास ने परिवार की संबंधो, रिश्ते-नाते संबंधो, संदर्भों में आयीउदासीनता एवं परिवार नामक संस्कार संस्था पर लग रहे प्रश्न चिन्ह को हटाने का आशावाद व्यक्त हुआ है।मैत्रेयी पुष्पा का कस्तुरी कुंडल बसै उपन्यास स्त्री जीवन के शैशवकाल से विवाहोपरांत कीकथा की बड़ी हीयथार्थ एवं प्रखर वाणी है | यह आत्मकथात्मक उपन्यास है।इसी दौरान मैत्रेयी पुष्पा- का 'विजन' उपन्यास पैसे कमाने के हेतू से डॉक्टरी जैसे पवित्र पेशे में आरहे गिरावट पर व्यंग कसता है |मधु कांकरिया- का 'सलाम आखिरी' अपन्यास वेश्याओं (सेक्स वर्कर्स) कीसमस्याओं को रेखांकित भी करता है और प्रश्नांकित भी |गायत्री के कथन से यह स्पष्ट होता है "भंगियो सेभी बदतर जिदगी है हम रंडियो की कोने कोने का नरक धोकर भी उन्हें हमारी तरह पुलिस तो नही हडकती.बीमारी तो नही दबोचती वहाँ मैल की दुर्गंध, यहाँ चाम की दुर्गंध | नासिरा शर्मा- का अक्षय वट उपन्यासनास्टेल्जीया है। जो महानगरीय दुरावस्था एवं दुर्दशा का चित्रण है। पदमा सचदेव जम्मू जो कभी शहर था"उपन्यास इतिहास बनती जा रही डुबती कश्मीर की सुंदरता का वर्णन मात्र है| अलका सरावगी ने कोईबात नही उपन्यास के माध्यम से सामाजिक, राजनीतिक, स्थितियों को दर्शाते हुए कोई बात नही वालीमानसिकता पर प्रकाश डाला है |

जयंती का आस पास से गुजरते हुए उपन्यास की आधुनिक नायिका अनुअपना स्पेस ढूंढती है । इसी चाह में अत्याधुनिक रूप से उन्मुक्तता को अर्जित करने की होढ मे हाथो से बहुतकुछ किस तरह फिसल जाता है इसका उदाहरण अनु है | जयंती ने अनु के माध्यम से आधुनिक, आत्मनिर्भर,महत्वाकांक्षी अस्मिता के प्रति जागरुक तो दुसरी ओर जीवन की रिक्तता से फलित स्त्री का चित्रणकिया है ऐसा कहना समीचिन होगा |नासिरा शर्मा का कुईयानजान उपन्यास महनगरों में स्थित पानी की समस्या कासमाधान पूछता है | शरद सिंह का पिछले पन्ने की औरत उपन्यास हाशियों पर रहें बेडिया समाज, उसकापरिवेश, विस्थापन, विपन्नता यौन शोषण, बेडिया पुरुष की कामजोरी आदि को अधोरेखित करता है । जयाजादवानी- का कुछ ना कुछ छूट जाता है । उपन्यास पारिवारिक सदस्यों के बदलते सोच विचार से उलझतेसंबंधों की गुल्थी सुलझाता हुआ दिखाई देता है । मनुष्य की कुछ पाने तो कुछ खोने की छटपटाहट जीवन केअधुरेपन का एहसास दिलाती है |मधु कांकरिया- का पत्ताखोर उपन्यास आज की यूचा पिढी में बढ रहीनशाखोरी तथा उसके मयंकर परिणामों की मीमांसा करता है। संस्कारों का अभाव भौतिक सुख, सुविधाओंसे लाड, प्यार से बिगडी संस्कृतीहिन परिवेश में पली दिशाहिन पिढी संस्कारों के अभावोंका दस्तावेज है।

उषा प्रियंवदा- का भया कबीर उदास उपन्यास कैंसर जैसी भयानक बिमारी एवं समस्या का निरुपन करता है| अलका सरावगी- का एक ब्रेक के बाद उपन्यास मनी इज एव्रिथिंग माननेवाली स्मार्टनेस युवा पिढी काप्रतिनिधित्व करता है | नासिरा शर्मा का जीरो रोड उपन्यास मध्यवर्गीय रामप्रसाद और राधारानी के दाम्पत्यजीवन की कहानी है । सिद्धार्थ और विवेक के माध्यम से नासिरा शर्मा ने विस्थापितों की समस्याओं संबंधीकई प्रश्न उठाये है । अनामिका- का दस द्वारे का पिंजरा उपन्यास की नायिका रमाबाई पंडिता का नामभारतीय नव जागरण के काल से आज तक आदर और सम्मान से लिया जाता है | पंडिता रमाबाई ने अपनेजीवन सफर में स्त्री होने की पीडा को देखा है, भोगा है, सहा है, सोचा है, समझा है। इसलिए अनेकानेकनारी चरित्र की परत दर परत खोलते हुए पिंजरे की टूटने खुलने, या तोडने की प्रेरणा देता हुवा यह उपन्यासनारी मुक्ती की कामना करता है। ममता कालिया- का 'अंधेरे का ताला' उपन्यास में लेखिका ने महिलामहाविद्यालय में शिक्षा जगत से जुड़े लोगों की मानसिकता तथा परिवेशगत समस्याओं को चित्रित किया है।

मनीषा कुलश्रेष्ठ- का शिगाफ उपन्यास की नायिका जो विदेशी है और वह कश्मरि के बिगडे वातावरण मेंहिंदू और मुसलमान की त्रासदी से चींतित है । विदेशी कश्मीरी विस्थापितों को लेकर चिंतित है किंतभारतीयों को इससे क्या ? सुधा अरोडा का 'यही कही था घर' उपन्यास परिवार नामक संस्था को टूटन कीकगार पर खड़ा पाता है | जिसमें परिवार के संघर्ष की मानसिकता से टूटते बिखरते दाम्पत्य जीवन की गाथाहै | मैत्रेयी पुष्पा- का गुनाह बेगुनाह उपन्यास महिला कर्मों की आँखों से इस व्यवस्था के बीभत्स्य रुप काफदापाश करती है। मनीषा कुलश्रेष्ठ का शालभंजिका उपन्यास कला जगत की दुनिया में अर्जित करते समयकई वर्जनाएँ होती है कला जगत की इस आंतरिक सत्य को अधोरेखित करता है।

आधुनिक समाज में रिश्तोकी बुनियाद किस तरह गड़ड-मड़ड हो रही है इसका भावविभोर दौड उपन्यास में चित्रण हुआ है। रास्तों परभटकते हुए उपन्यास ने पत्रकारिता एवं राजनीति क्षेत्र में फैले भ्रष्टाचार का फर्दाफाश किया है तो यह खबरनही ने भ्रष्ट व्यवस्था पर व्यंग्य करता है सब कुछ हो जाने के बाद भी भोगने के बजाय कोई पर्याय शेष नहोने की अवस्था में कोई बात नही वाली मानसिकता को उजागर किया है| कश्मिर की वास्तविकता पर तीनउपन्यास लिखे गए 'कथा सतीसर मिथकीय कल्पना से भरपूर पौराणिक कथा के माध्यम से प्रासंगिकता कोपकडे रखता है। तो जम्मू जो कभी शहर था मे जम्मू की सुंदरता किस तरह इतिहास बनती जा रही है इसकाअवलोकन कराती है | तो शिगाफ उपन्यास ने विस्थापितो को समस्या का समाधान माँगा है | आदिवासीजन जातियों पर लिखे दो उपन्यास विशेष उल्लेखनीय रहें है । अल्मा कबुतरी कबुतरा जाती की संघर्ष औरकूटनीति की दास्तां है तो पिछले पन्ने की औरत बेडिया समाज की दयनीय दशा का वास्तविक रुप दर्शातीहै |पारिवारिक परिवेश से जुड़े उपन्यासों में शेष कादंबरी पुरुष प्रधान समाज व्यवस्था का घोतक है।

-अगनपाखी उपन्यास सामंती परिवार एवं समाज परिवेश में स्थित पुरुष अंहम का लेखा जोखा है | कस्तुरीकुण्डलबसै उपन्यास वैधव्य के बाद स्त्री संघर्ष की जिजीविषा है | गिलिगडू उपन्यास पारिवारिक रिश्ते नातेसंबंधोसंदर्भों में आए उदविग्नावस्था का मीमांसा करता है। पारिवारिक उलझनों की सुलझन कुछ न कुछछूट जाता है उपन्यास है यही कही था घर आज दिन संघर्ष से बदलती मानसिकता इससे हुई परिवार की टूटन, बिखरन, दाम्पत्य जिवन परिवेश एवं परिस्थिती की ओर उंगली निर्देश करता है | सेक्स को लेकरलिने तिरोहित नामक उपन्यास का स्त्री समलैंगिकता का कथ्य हमें सेक्स संबंधी विचार बदलने को मजबूरकरता है | तो सलाम आखिरी उपन्यास स्त्री वेश्याओं वेश्याओं की नारकीय जीवन यातना से परिचित | आस पास सेगुजरते हुए ने एक ऐसी आधुनिका को रेखाकित किया है जो भरकर भी खालीपन से गदगद है | भया कबीराउदास का कथ्य बीमार स्त्री के आत्मविश्वास से भरे संघर्ष ने जीवन की दार्शनिकता से परिचित कराया है।

जो हमें जीने की सिख देता है। शालभंजिका उपन्यास कला जगत के दोहरे चेहरे (भोगवाद) का पर्दाफाशकरने में कामयाब हुआ है स्त्री जीवन से जुड़ा अंधेरे का ताला उपन्यास पुरुषी मानसिकता मानसिकता एवं परिवेश केपरिणामों से त्रासदी का प्रतिक है | गुनाह बेगुनाह उपन्यास व्यवस्था की बीभीत्सता को शब्दबदध करता है|पत्ताखोर उपन्यास युवा पिढी में संस्कार हीन परिवेश से बढ़ती नशाखोरी और दिशाहीन भटकन से परिचित-कराता है। साथ ही एक ब्रेक के बाद उपन्यास पैसा पैसा पैसा यानी मनी इज एव्रिथींग वाली कल्चर कोबढ़ावा देनेवाली परिस्थिती को रेखांकित करता है जहाँ पर जिरो रोड उपन्यास विदेश से गाँव की यात्रा औरमध्यमवर्गीय जीवन पंख की गाथा है। विलपिरें क प रो ग्र दस द्वारे का पिंजरा उपन्यास नारीमुक्ती की कामना बड़े आदर और सम्मान के साथ करता है | कुइयाजान महानगरीय पानी समस्या से तोअक्षयवट हमे महानगरीय दूरावस्था से।

यहाँ पर बात केवल लेखन की नही है । बात उस स्त्री लेखन की है जिससे कोईबातछुटी नही है।यहाँ पर चो स्वंय ये दावा कर रही है कि हमारी भी एक दृष्टी होती है । वहाँ पर हमें लगता है सब कुछ ठिक हैमगर होता उससे उल्टा है | स्वंय समस्याओं से घिरी औरत का संघर्ष जीवन से होता है कि अधितर संघर्षउस पुरुष हैवानियत से है जो शुरु तो खुद से होता है मगर बदसूरत परिवशे को करता है। फिर एक नजरस्त्री की नजर से मिलाकर और उसकी नजर से देखकर पता चलता है | हम अपने आप में किते गिर रहे है।बेवजह दोष परिवेश को देते है आखिरक्यो ? स्त्री लेखन इतनी सक्षमता से हुआ है किकोई भी बात उनके लेखन से अछूत रही हो ऐसा नहीं | मनुष्य जीवन एवं समाज परिवेश से जूडे अन्यत्र सभीविषयों को गहरा स्पर्श करते हुए उन्होंने एक तरह को उपने सोच विचार की स्तरियता का दर्शन ही दिया है |इसलिए अन्यान्य विषयों को लेकर महिलाद्वारा महिलाद्वारा लिखा गया उपन्यास लेखन सरहनीय रहा है |